Part III
Paper V

Revolt of 1857 - Causes and Nature

- 1857 का संग्राम ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़ी और अहम् घटना थी। इस विद्रोह की शुरूआत तो सिपाहियों के विद्रोह से हुई परन्तु बाद में उनका स्वरूप व्यापक होकर जनआंदोलन का रूप ले लिया। वस्तुतः यह विद्रोह त्वरित विद्रोह नही था बल्कि 100 वर्षों तक ब्रिटिश शासन द्वारा किये गये शोषण का परिणाम था। हालांकि जनजातीय तथा ग्रामीण विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ होते रहे परन्तु व्यापक स्वरूप नही रहने के वजह से उन विद्रोहों का कोई खास प्रभाव अंग्रेजी शासन पर नही पड़ा।

कारण :-

ब्रिटिश शासन की विदेशी प्रकृति :- भारत का परिवेश England के परिवेश से बहुत अलग था। कार्नवालिस अपने ब्रिटिश दंभ से प्रभावित होकर भारत में नई भू. राजस्व, न्याय व्यवस्था, पुलीस व्यवस्था लागू किया परन्तु भारतीयों को यह पद्धति रास नही आयी। परिणामस्वरूप 1816 में बरेली का विद्रोह, कोल विद्रोह तथा संथाल विद्रोह

Scanned with CamScanner

इत्यादि हुये।

विः ब्रिटिश कंपनी की विस्तारवादी नीति -:
1857 के विद्रोह का प्रमुख राजनीतिक कारण ब्रिटिश सरकार की 'गोद निषेध' या हड़प नीति थी यह अंग्रेजो की विस्तारवादी नीति थी जो भार ब्रिटिश भारत के गवर्नर लार्ड डलहौजी के दिमाग की उपज थी। कंपनी के गवर्नर जनरल ने भारतीयें राज्यो को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाने के उद्देश्य से कई नियम बनाये। उदाहरण के लिए किसी राजा के निसंतान होने के पर उसका राज्य ब्रिटिश साम्राज्य का बना दिया जाता था। इसी तर्ज अंग्रेजों ने सतारा, जैतपुर, संभलपुर, बघाट झाँसी और नागपुर का अधिग्रहण कर लिया। इसके अतिरिक्त 1858 में अवध को कुशासन के आरोप में ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। डलहौजी ने नाना साहेब के पेंशन बंद कर दिया तथा साथ ही बहादुरशाह जफर को अधिकारच्यूत करने का षड़यंत्र किया।

प्रशासनिक कारण -: ब्रिटिश कंपनी की नीतियाँ नस्लवाद से प्रभावित थी। सभी महत्वपुर्ण प्रशासनिक पदों पर अंग्रेज विराजमान थे। प्रशासन एवं नागरिकों के बीच अपरिचय

Scanned with CamScanner

की स्थिति हो गई थी। इसकी वजह थी जागीरदार एवं ताल्लुकदार जैसे मध्ययुगीन मध्यस्थ पदों का जिनसे लोगों का गहरा परिचय था अंत किया गया।

<u>आर्थिक कारण</u> :- ब्रिटिश कंपनी ने औपनिवेशिक नीतियों को प्रोत्साहन दिया। भारत से धन की निकासी एक ज्वलंत समस्या बन गई थी। देश से बहुत हद तक आर्थिक शोषण हुआ जिसके परिणामस्वरूप परम्परागत आर्थिक ढाँचे का पुर्णतया विनाश हो गया। ब्रिटिश सरकार ने मुक्त व्यापार के सिद्धान्त का प्रतिपादन करके भारत को तैयार माल का बाजार बना दिया ब्रिटेन के औद्योगिक विकास के लिए भारत को कृषि उपनिवेश के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। विलियम बेंटिक के द्वारा बहुत सारे लगान मुक्त जमीन का अधिग्रहण किया गया।

<u>सामाजिक तथा धार्मिक कारण</u> :- ब्रिटिश सरकार ने समाज में सुधार हेतु सति-प्रथा का अंत किया तथा विधवा-विवाह को प्रोत्साहित किया। 1813 में ईसाई मिशनरियों को भारत में धर्म प्रचार की छूट दे दी गई थी। पश्चात्य शिक्षा के प्रचार, रेलवे एवं डाकतार

के विकास को भी भारतीय बड़ी शंका के साथ देख रहे थे।

सैनिक कारण -

सैनिकों की वैतनिक सुविधाएँ नस्लवाद पर आधारित होती थी। सेवा की शर्तों में भी भेदभाव होता था। भारतीय सिपाही को सूबेदार रैंक के ऊपर की प्रोन्नति नहीं मिल सकती थी। इसके अलावा भारत में ब्रिटिश शासन के विस्तार के बाद भारतीय सिपाहियों की स्थिति बुरी तरह प्रभावित हुई। उनको अपने घरों से काफी दूर-दूर सेवा देनी पड़ती थी। 1856 में लार्ड - कैनिंग ने एक नियम जारी किया जिसके मुताबिक सैनिको को भारत के बाहर सेवा देनी पड़ सकती थी। बंगाल आर्मी में बंगाल अवध के उच्च समुदाय के लोगों को भर्ती की गई थी। उनकी धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक उनका समुद्र पार करना वर्जित था। उनलोगों को लार्ड कैनिक के नियम से शक हुआ कि ब्रिटिश सरकार उनलोगो को क्रिस्चयन बनाने पर तुली हुई है। अवध के विलय के बाद नवाब की सेना को भंग कर दिया गया। उनके सिपाही बेरोजगार हो गये और ब्रिटिश हुकुमत के कट्टर दुश्मन बन गये।

Scanned with CamScanner

तात्कालिक कारण के रूप में चर्बी वाले कारतूस की अफवाह ने अपनी अलग भूमिका निभाई। यह सिपाही विद्रोह देखते देखते देश के विस्तृत भू-भाग में फैल गया। अवध, रोहेलखण्ड, दोआब, बुंदेलखंड और मध्य भारत में इसका फैलाव हुआ एवं सैनिक और कृषण भी इसमें शामिल हो गए। यह विद्रोह लोकप्रिय आंदोलन की तरफ बढ़ने लगा। भारतीय समाज के बहुत से वर्ग इसमें शामिल हो गये। कंपनी एवं ब्रिटिश ऑफिसर के साथ-साथ महाजन भी विद्रोहियों के शिकार हो गये। सम्पूर्ण आंदोलन के बीच हिन्दुओं और मुसलमानों ने अभूतपूर्व एकता का परिचय दिया।

स्वरूप :

1857 के विद्रोह के Nature को निर्धारित करने में बहुत अधिक मतभेद देखने को मिलता है एवं इसकी वजह है कि इसके के अध्ययन के लिए पर्याप्त सामग्री का आभाव है। परम्परागत इतिहासकारों ने अध्ययन सामग्री के रूप में सरकारी अभिलेखागार का ही सहारा लेकर इसके

Scanned with CamScanner

हो गयी। सुरेन्द्र नाथ सेन लिखते है कि स्वरूप की व्याख्या की है। कुछ इतिहासकारों ने स्वाभाविक रूप से 1857 के विद्रोह को सिपाही विद्रोह माना है इसके अतिरिक्त कुछ अंग्रेज ब्रिटिश इतिहासकारों ने जानबुझ कर इसे सिपाही विद्रोह का नाम दिया है। इसमें जॉन के मैलेसन, बॉरेस टी आर होम्स प्रमुख है। इन इतिहासकारों ने दिखाने की कोशिश की कि मूलभूत ब्रिटिश नीतियों में कोई कमजोरी नही थी। कुछ सतही त्रुटियों के करण भारत में असंतोष पैदा हुआ।

दूसरी तरफ वी० डी० सावरकर ने इसे स्वतंत्रता संग्राम ~~प्रभावित~~ प्रमाणित करने की कोशिश की है। किन्तु जैसा की हमलोग जानते है कि उनका उद्देश्य इतिहास लेखन नही था वरन् भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की भावना विकसित करना था पट्टाभि सीता रमैया के अनुसार भी 1857 का महान आंदोलन भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम था। अशोक मेहता ने भी अपनी पुस्तक द ग्रेट रिवोल्ट में यह सिद्ध करने का प्रयास किया। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी लिखा कि यह केवल सैनिक विद्रोह था बाद में जन विद्रोह में परिवर्तित

हो गयी। सुरेन्द्र नाथ सेन लिखते है कि युद्ध धर्म के नाम पर प्रारंभ होकर हुआ था और स्वतंत्रता युद्ध में जाकर समाप्त हुआ क्योंकि इस बात में कोई संदेह नहीं कि विद्रोही विदेशी शासन से मुक्ति चाहते थे और वे पुनः पुरातन शासन व्यवस्था स्थापित करने के इच्छुक थे जिनका प्रतिनिधित्व दिल्ली का बादशाह करें। मार्क्सवादी इतिहासकारों ने 1857 के विद्रोह को ब्रिटिश शासन एवं सामन्तवर्ग के विरुद्ध किसान एवं सैनिकों के बीच का प्रजातांत्रिक गठबंधन माना है।

समय - समय पर विभिन्न इतिहासकारों द्वारा 1857 के बलवे का स्वरूप निर्धारण करने की चेष्टा की गयी है। जॉन डब्ल्यू. के. ने कहा है कि हमें ये बात अच्छे से याद रखनी चाहिए कि एक विशाल गैर सैनिक जनसंख्या ने ही अपनी अग्रिम भूमिका निभाई। दूसरी तरफ जी. बी. मैलेसन ने इस तथ्य का विरोध करते हुए इसे सैनिक विद्रोह प्रमाणित करने की कोशिश की है।

Scanned with CamScanner